17

आप परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं

(मत्ती 7:7-11)

प्रार्थना-इससे कीमती या इससे महत्वपूर्ण विषय और नहीं है। एक स्कॉटलैंड के कलर्जीमैन जॉन वालेस (1802-1870) ने लिखा है, ''[प्रार्थना] हाथ को हिलाती है। जो संसार को हिला देता है।''[1] अंग्रेज़ कवि अल्फ्रेड (1809-1892) ने कहा है, ''प्रार्थना से इतनी चीज़ें बनाई जाती हैं कि वे संसार के सपनों से भी अधिक हैं।''[2] अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन (1809-1865) ने अमेरिकी गृह युद्ध के काले दिनों की बात करते हुए कहा, ''मुझे इस यकीन के कारण कि और कहीं जाने का रास्ता नहीं है कई बार अपने घुटनों पर आना पड़ा।''[3]

पहाड़ी उपदेश पर पिछले पाठों में हम ने प्रार्थना पर निर्देश और प्रोत्साहन पाए थे। मत्ती 6:5-8 में हम ने सीखा कि प्रार्थना कैसे *नहीं* करनी है। यानी हमें ''मनुष्यों को दिखाने के लिए'' प्रार्थना नही करनी है। 6:9-15 में हम ने जाना कि ''नमूने की प्रार्थना'' के अध्ययन के अनुसार हमें प्रार्थना *कैसे* करनी है। अब 7:7-11 में हमें बताया जाएगा कि प्रार्थना करने पर हमें *क्या अपेक्षा* रखनी चाहिए।

इससे पिछले पाठ में हम ने मत्ती 7:7-11 को संक्षेप में देखा था क्योंकि यह ''दूसरों को साथ लेकर चलना'' से सम्बन्धित है।[4] इस पाठ में हम इस वचन को और निकट से जांचना चाहते हैं। प्रार्थना की सामर्थ पर यह मेरा पसन्दीदा वचन है। इ. स्टैनली जोन्स ने इसे ''[ईश्वरीय सहायता] की सबसे आत्मीय, सबसे अनुग्रहकारी और सबसे अधिक उपयुक्त पेशकश'' कहा ''जो मानवीय कानों में पड़ी हो।''[5] मैंने इस पाठ को ''आप परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं'' नाम दिया है।

अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर के लिए (7:7, 8)

पहले तो यह वचन यह सिखाता है कि आप *अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर के लिए* परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं। यीशु ने कहा, ''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूंढो, तो तुम पाओगे। खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; जो ढूंढता है, वह पाता है और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा'' (आयतें 7, 8)।

निरन्तर याचनाएं

आयत 7 और 8 में ''मांगो,'' ''ढूंढ़ो'' और ''खटखटाओ'' है।'' ''मांगो'' शब्द इच्छा को व्यक्त करता है। फिलिप्स ब्रूस ने प्रार्थना की परिभाषा ''इच्छा जो परमेश्वर की ओर मुड़ गई है'' के रूप में परिभाषित किया।[6] ''मांगो'' भी परमेश्वर पर निर्भरता का संकेत देता है।[7] ''ढूंढो'' शब्द अत्यावश्यकता *के बोध का संकेत देता है*। यिर्मयाह 29:13 में प्रभु ने कहा, ''तुम मुझे ढूंढ़ोगे

और पाओगे भी; क्योंकि तुम सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।'' ''खटखटाओ'' शब्द *दृढ़ता* का सुझाव देता है। इसके बराबर का वचन लूका (11:9-13) के बाद यीशु का उस आदमी का दृष्टांत है जो किसी अप्रत्याशित अतिथि के लिए भोजन देने की कोशिश करते हुए उत्तर में ''न'' नहीं सुनना था (आयतें 5-8)।

अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि ''मांगो'' से ''ढूंढ़ो'' से ''खटखटाओ'' में जाने में, गहराई के बढ़ने से इस लेख को एक बच्चे के विवरण से समझाया जिसे घुटनों पर चोट लगी है और उसे मां चाहिए।[9] वह उसे अपने पास आने के लिए कहते हुए बुलाता है। यदि कोई उत्तर न मिले तो वह उसे ढूंढ़ने लगता है। यदि उसे पता चलता है कि उसकी मां बन्द दरवाजे वाले कमरे में है तो वह तब तक दरवाज़ा खटखटाता रहेगा जब तक वह उत्तर नहीं देती। एक और लेखक ने एक आदमी के किसी पुराने मित्र का पता लगाने की कोशिश करने का उदाहरण इस्तेमाल किया।[9] वह अपने मित्र के ठिकानो के बारे में पूछता है। वह उस जगह को ढूंढ़ता है जहां वह रहता है। फिर वह जाकर उसके द्वार पर खटखटाता है।

याकूब ने लिखा, ''तुम्हें इसलिए नहीं मिलता, कि मांगते नहीं'' (4:2)। परन्तु यीशु नहीं चाहता कि हम एक ही बार मांगे और फिर बन्द कर दें। वह चाहता है कि हम मांगते रहें और मांगना बन्द न करें। यूनानी भाषा में ''मांगो,'' ''ढूंढ़ो,'' और ''खटखटाओ'' तीनों ही वर्तमान काल में हैं जो निरन्तर क्रिया का संकेत देते हैं। AB में ''मांगते रहो,'' ''ढूंढ़ते रहो,'' और ''खटखटाते रहो'' है। यीशु ने अपने चेलों को बताया ''कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए'' (लूका 18:1)।

एक ज़बर्दस्त प्रतिज्ञा

यदि हम लगातार प्रार्थना करते रहें तो उसकी अद्‌भुत प्रतिज्ञा यह है: ''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूंढो, तो तुम पाओगे। खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा'' (आयत 7)। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम संदेश को गलत न समझें प्रभु ने वचन को दोबारा दोहराया, और यदि हो सके तो इसे और मज़बूत बनाएं: ''क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; जो ढूंढता है, वह पाता है और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा'' (आयत 8)।

यीशु की बातें जीवन के सभी क्षेत्रों में कुछ हद तक लागू होती हैं-चाहे हम कौशल पाने की, धन कमाने की, अपने स्वास्थ्य को सुधारने की बात कर रहे हों या फिर किसी और उद्देश्य को पाने की जिसकी हमें इच्छा हो। यदि हमें कुछ चाहिए तो आमतौर पर हमें उसे पाने के लिए ढूंढ़ने में दृढ़ रहना आवश्यक होता है। कुछ ही लक्ष्य हैं जो बिना सच्ची लगन के पाए जा सकते हैं। आमतौर पर संसार में लागू होने वाली बात आत्मिक तौर पर और भी महत्वपूर्ण होती है। यदि हम प्रभु से आशीष पाने के इच्छुक हैं तो हमें पूछना आवश्यक है, हमें लगन से ढूंढना आवश्यक है और हमें खटखटाते रहना आवश्यक है। यदि हम इन बातों को करते हैं तो यीशु ने वचन दिया है कि हमें मिलेगा, हम पाएंगे और आशिषों के द्वार हमारे लिए बिल्कुल खुले होंगे।

बाइबल में यदि कोई बात स्पष्ट बताई गई है वह तो यह है कि परमेश्वर भावना का उत्तर देता है। ''... बाइबल की विशिष्ट बातों के लिए 667 प्रार्थनाओं में से 454 प्रार्थनाओं के उत्तर मिले होने की बात मिलती है।''[10] परमेश्वर के प्रार्थना का उत्तर देने पर मैंने अपनी बाइबल क्लास में

उनकी कुछ पसन्दीदा आयतों के बारे में पूछा, और उन्होंने जो आयतें बताईं उन में से कुछ ये हैं:[11]

> मैं यहोवा के पास गया, तब उस ने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया (भजन संहिता 34:4)।
>
> '' इसलिए मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, ओर तुम्हारे लिए हो जाएगा'' (मरकुस 11:24)।
>
> धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है (याकूब 5:16ख)।
>
> और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उससे मिलता है (1 यूहन्ना 3:22क)।

यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है कई और आयतें दी जा सकती हैं, पर हमारे इस वचन पाठ से अधिक स्पष्ट या अधिक शक्तिशाली ढंग से इस सच्चाई को कोई और आयत नहीं बताती: ''मांगो तो तुम्हें दिया *जाएगा*; ढूंढ़ो तो तुम *पाओगे*; खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला *जाएगा*।'' डी मार्टिन जोन्स ने लिखा है, ''मैं इससे अच्छी, इससे आनन्द देने वाली या इससे शान्तिदायक बात की कल्पना नहीं कर सकता जिससे अपने [जीवनों] की अनिश्चित्ताओं और खतरों का सामना करें। ...'' यह उन बड़े व्यापक और अनुग्रहकारी वचनों में से एक है जो बाइबल केवल बाइबल में मिलते हैं।[12]

कुछ लोग आपत्ति करते हैं: ''एक मिनट रुकना! परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया है! मांग मांगकर मेरा गला फट गया है, ढूंढ़ ढूंढ़ कर मैं थक गया हूं और खटखटाते हुए उंगलियों की गांठें घिस गई हैं पर मुझे न तो मिला, न मैंने पाया और न मेरे लिए खोला गया।'' मत्ती 7:7-11 जैसी आयतें बताती हैं कि परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है, पर वह यह नहीं बताती कि प्रार्थना किसी प्रकार का टोना नहीं है जो परमेश्वर को हर किसी बात के लिए ''हां'' कहने को विवश कर दे। अन्य आयतें सिखाती हैं कि स्वीकार्य प्रार्थना के लिए शर्तें हैं।

हमें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मांगना आवश्यक है। ''और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है'' (1 यूहन्ना 5:14)।

हमें विश्वास से मांगना आवश्यक है। ''पर विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा'' (याकूब 1:6, 7)।

हमें निस्वार्थ मन से प्रार्थना करनी आवश्यक है। ''तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग-विलास में उड़ा दो'' (याकूब 4:3)।

आपत्ति करने वाले फिर बोल सकते हैं: ''प्रार्थना के लिए शर्तें? तो परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर तभी देगा यदि इन सब शर्तों को पूरा किया जाए? मुझे मालूम था कि कुछ गड़बड़ है!'' मामले को गम्भीरता से सोचें और मेरा मानना है कि आप इस बात से प्रसन्न होंगे कि प्रार्थना के लिए शर्तें हैं। परमेश्वर का किसी भी विनती को झट से मान लेने का विचार किसी सपने के सच होने जैसा लग सकता है, पर ऐसा प्रबन्ध जल्द ही बड़ी सिरदर्दी बन जाएगा। आमतौर पर हम पत्थर और सांप मांग रहे होते हैं जबकि हमें लगता है कि हम रोटी और मछली मांग रहे हैं।

अलेश मोटायर ने लिखा है:

> यदि ऐसा होता कि हम जो भी मांगते, परमेश्वर को वह देना आवश्यक होता, तो मैं तो कभी दोबारा प्रार्थना न करता, क्योंकि किसी भी बात के लिए परमेश्वर से मांगने के लिए मुझे अपनी बुद्धि पर पर्याप्त भरोसा नहीं होना था; और मुझे लगता है कि आप यदि इस पर विचार करें तो आप भी मान जाएंगे। यह निर्बल मानव पर असहनीय बोझ होता। यदि परमेश्वर प्रार्थना की अपनी प्रतिज्ञाओं में जो मांगा जाए वही देने को बाध्य हो तो निर्बल मानवीय बुद्धि पर एक असहनीय बोझ पड़ जाता है, जब हम इसे मांगते हैं और अपनी शर्तों के अनुसार मांगते हैं। हम उस बोझ को कैसे सह सकते हैं?[13]

परन्तु अपने वचन पाठ की अदभुत प्रतिज्ञा से ध्यान न हटाएं कि परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। जरूरी नहीं है कि वह ''हां'' में ही उत्तर दे परन्तु वह उत्तर देता है। एक प्रचारक ने सम्भावित ईश्वरीय उत्तरों को समझाने के लिए एक सरल रूपरेखा का इस्तेमाल किया:

- यदि विनती गलत है, तो परमेश्वर कहता है, *''नहीं।''*
- यदि समय गलत है, तो परमेश्वर कहता है, *''धीरे धीरे चलो।''*
- यदि आप गलत हैं, तो परमेश्वर कहता है, *''बढ़ो।''*
- परन्तु यदि विनती सही है, समय सही है और आप भी सही हैं, तो परमेश्वर कहता है, *''चलो!''*[14]

बाइबली विचार यह है कि जीवन एक सफ़र है, जटिलताओं और असफलताओं से भरा हुआ जीवन।[15] इस संसार में इस बात से उतना फ़र्क नहीं पड़ता कि समस्याएं कितनी हैं जितना इस बात से पड़ता है कि हम उनका सामना करने को तैयार हैं या नहीं। एक बात जो हमारी सहायता करती है वह इस बात का यकीन है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

आपको केवल अच्छी चीज़ें देने के लिए (7:9-11)

आप अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर के लिए परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं। आप *केवल अच्छी चीज़ें देने के लिए भी परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं*।

सांसारिक पिता (आयतें 9, 10)

हमारे वचन पाठ के अगले भाग में यीशु ने पहले सांसारिक पिताओं की बात की: ''तुम में से ऐसा कौन मुनष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? व मछली मांगे, तो उसे सांप दे?'' (आयतें 9, 10)।[16] पहाड़ी उपदेश गलील में सुनाया गया था। गलील की झील के आस पास पाया जाने वाला सबसे आम खाना रोटी और मछली होता था। (यूहन्ना 6:9 में आपको उस छोटे लड़के की बात याद है?) फिर समुद्र के किनारे पानी से घिसे कई पत्थर और चट्टानों में छिपे विभिन्न किस्मों के सांपों की बहुतायत थी।

यीशु का पहला उदाहरण एक पुत्र के अपने पिता से रोटी मांगने का था। एक अर्थ में यीशु

ने पूछा, ''क्या कोई प्रेमी पिता उस विनती का उत्तर अपने पुत्र के साथ क्रूर मज़ाक के साथ करेगा? क्या वह अपने पुत्र के हाथ में घिसा हुआ गोल भूरा सा पत्थर[17] रख देगा?'' इसका सांकेतिक उत्तर है कि ''बेशक नहीं!''[18] दूसरे उदाहरण में मज़ाक खतरनाक बन जाता है क्योंकि मछली की जगह सांप दिया जाता है। आमतौर पर सांप मछली जैसा नहीं होता, इस कारण कुछ लेखकों ने सुझाव दिया है कि ''सांप'' (*ophis*) का अर्थ ''बिना चोयंटों वाली सर्पमीन जैसी कुछ मछलियां'' हो सकता है।[19] यहूदियों को बिना चोयंटों वाली मछली खाने की मनाही थी (देखें लैव्यव्यवस्था 11:12)। यदि कोई पिता अपने पुत्र को बिना चोयंटों वाली मछली देता तो उसे औपचारिक रूप में अशुद्ध बना देता। सांप हो या सर्पमीन जैसी मछली, यह एक हानिकारक मज़ाक होता। यानी यह शारीरिक या आत्मिक किसी भी प्रकार से हानिकारक हो सकता था। यीशु ने कहा कि जिम्मेदार पिता अपने पुत्र के साथ कभी भी ऐसा नहीं करेगा।

यीशु हमें समझाना चाहता था कि हमारा स्वर्गीय पिता हमारे साथ ऐसा नहीं करता। यीशु के समय में मूर्तिपूजक लोग देवताओं में विश्वास करते थे जो दर्दनाक और हानिकारक खेल खेलते थे। एक यूनानी मिथ्य में किसी देवी की बात बताई जाती है जो किसी मनुष्य के प्रेम में पड़ गई।[20] देवताओं के राजा ने उस देवी को अपने प्रेमी के बदले में मुंह मांगा वर देने की पेशकश की। उसने मांग लिया कि वह कभी मरे न, पर वह यह न मांग पाई कि वह व्यक्ति जवान रहे। वह आदमी बूढ़ा होता गया पर कभी मर नहीं सका। वह दान उसके लिए श्राप बन गया। सच्चा परमेश्वर ऐसा *नहीं* है।

स्वर्गीय पिता (आयत 11)

यीशु अपनी प्रासंगिकता बनाने को तैयार था। मानवीय माता पिता की अपने बच्चों की विनतियों के उत्तर देने के ढंग की बात करने के बाद, उसने कहा, ''सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?'' (आयत 11)।

''परमेश्वर की तुलना में, सब मनुष्य, चाहे वह कितने भी अच्छे माता पिता क्यों न हों, बुरे ही हैं।''[21] हम सभी में कमी है। जब मेरी बेटियां बड़ी हो रही थीं, तो मैं एक अच्छा पिता बनने की बड़ी कोशिश करता। मैंने वही किया जो कभी भी मुझे लगा कि उनके लिए सबसे अच्छा है। अब जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं, तो मुझे अपनी कई गलतियां दिखाई देती हैं, और मुझे यकीन है कि मैंने और गलतियां भी की हैं जिनका मुझे अभी भी पता नहीं हैं। हमें कितने धन्यवादी होना चाहिए कि हमारे स्वर्गीय पिता में वे खामियां नहीं हैं जो हम मानवीय माता पिता में हैं! हमारे उलट है वह ...।[22]

(1) *परमेश्वर जानता है कि उसे बच्चों के लिए सबसे बढ़िया क्या है।* यह जानना हमेशा आसान नहीं होता था कि मेरी लड़कियों के लिए सबसे अच्छा क्या है, पर परमेश्वर को हमेशा पता होता है कि सबस बढ़िया क्या है।... जॉन आर. स्टॉट ने लिखा है ''... यदि हम [परमेश्वर से] अच्छी चीज़ें मांगे, तो वह उन्हें देता है; यदि हम वह मांगे जो अच्छी नहीं हैं (या तो वह अपने आप में अच्छी नहीं हैं या हमारे या दूसरों के लिए अच्छी नहीं हैं, सीधे या परोक्ष रूप में, तुरन्त या अन्त में) तो वह उन्हें देने से मना कर देता है।'' स्टॉट ने अपने विचारों को ''और पर्फ़्क

केवल वही जानता है'' इन शब्दों को साथ विचार किया।[23]

(2) *परमेश्वर अपने बच्चों को हमेशा जो अच्छा है वह देने के योग्य होता है।* इस बात में की मैं अपने बच्चों के लिए क्या कर सकता हूं, मैं समय, ऊर्जा और रिक्त से संक्षिप्त था। परमेश्वर पर ऐसी कोई सीमाएं नहीं है। पौलुस ने लिखा है, ''और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर, समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो'' (2 कुरिन्थियों 9:8)।

(3) *परमेश्वर अपने बच्चों के प्रति हमेशा दयालु रहता है।* क्या आपने अपने बच्चों के साथ कभी अपना आपा खोया है और उन्हें कुछ ऐसा कहा या उनके साथ कुछ ऐसा किया है कि आपको खेद हुआ हो। मुझे उन पलों को याद करना अच्छा नहीं लगता, पर कई बार मैं अपने बच्चों पर गुस्सा होता हूं, विशेषकर जब मैं थका हुआ या परेशान होता हूं। परमेश्वर में मानवीय माता पिता वाली कमी नहीं है (देखें यशायाह 49:15)।

(4) *परमेश्वर अपने बच्चों को आवश्यकता पड़ने पर हमेशा उनके पास होता है।* ऐसे समय आए हैं जब मेरी बेटियों को मेरी आवश्यकता होती थी और मैं तुरन्त उनके पास नहीं जा सकता था। परन्तु परमेश्वर हमेशा पास होता, अपने बच्चों को ''जो अच्छा है'' वह देने को सदा तैयार ''ऐसा परमेश्वर है, जो दूर नहीं, निकट ही रहता'' है (यिर्मयाह 23:23)।

जब यीशु ने कहा कि परमेश्वर ''अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं'' देता है तो उसके दिमाग में कौन सी अच्छी वस्तुएं थीं? लूका में इसके समानान्त पद में, ''अच्छी वस्तुओं'' की जगह वचन में ''पवित्र आत्मा'' है (लूका 11:13)। लूका 11 अध्याय में ज़ोर उन आत्मिक आशिषों पर है जो परमेश्वर अपने बच्चों को देता है।[24] जैसा कि पहले देखा गया है, यह वह सब आकर्षक ''अच्छी वस्तुएं'' हैं जो वह हमें देता है। परन्तु मत्ती 7 अध्याय में भौतिक आशिषें लगभग निश्चित रूप में शामिल हैं। अध्याय 6 में यह प्रतिज्ञा दी गई थी कि परमेश्वर जीवन की भौतिक आवश्यकताएं उसे देता है जो पहले उसके धर्म और उसके राज्य की खोज करते हैं (6:33)। अपनी नमूने की प्रार्थना में यीशु ने संकेत दिया कि हमें भौतिक और आत्मिक दोनों आशिषों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए (6:11, 12)। इसलिए ''अच्छी वस्तएं'' निश्चित रूप में वे *सभी* अच्छे दान हैं जो हमें स्वर्गी पिता से मिलते हैं। जैसा यकूब ने लिखा है, ''क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है'' (याकूब 1:17)।

गैर मसीही लोग आपत्ति करते हैं, ''पर मैं तो परमेश्वर की सन्तान हूं, और उसने मुझे अच्छी वस्तुएं नहीं दी हैं! वास्तव में कुछ बुरी बातें हाल ही में मेरे साथ ज़रूर हुई हैं!'' काश की मुझ में सन्तोष जनक ढंग से समझाने की योग्यता और समझ होती कि वे ''बुरी बातें'' क्यों हुईं हैं, पर मुझ में वह समझ नहीं है। मैं कुछ सच्चाइयों का सुझाव दे सकता हूं जिन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए।

पहले तो हमें यह पता नहीं होता कि हमारे लिए बढ़िया क्या है। हमें लग सकता है कि हमें मालूम है। हमें अपने आप में यकीन हो सकता है कि हमें मालूम है, पर हमें पता नहीं होता। मेरे

चार वर्षीय नाती को लगता है कि केवल कुकीज़ खाना अच्छा है, जबकि वह गलत है। मानवीय जीवों के रूप में हम मेरे नाती की पौष्टिकता की जानकारी की तरह बहुत कम जानते हैं कि हमारे लिए सचमुच में ''अच्छा'' क्या है।

दूसरा, जो बात हमें लगता है कि बुरी है हो सकता है कि आशीष बनकर निकले। भजन लिखने वाले ने लिखा है, ''मुझे जो दु:ख हुआ वह मेरे लिये भला ही हुआ है, जिस से मैं तेरी विधियों को सीख सकूं'' (भजन संहिता 119:71)। आपने अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान एक अज्ञात के नाम इन शब्दों को सुना होगा:[25]

उसने सामर्थ मांगी कि वह प्राप्त कर सके;
उसे निर्बलता दी गई कि वह आज्ञा मांग सके।
उसने स्वास्थ्य मांगा कि वह बड़े काम कर सके;
उसे असमर्थता दी गई कि वह बेहतर कर सके।
उसने धन मांगा कि वह प्रसन्न रह सके;
उसे निर्धनता दी गई कि वह बुद्धिमान बन सके।
उसने शक्ति मांगी कि उसे लोगों की प्रशंसा मिल सके;
उसे कमज़ोरी दी गई कि वह परमेश्वर की आवश्यकता को महसूस कर सके।
उसने वे सब चीज़ें मांगी कि वह जीवन का आनन्द ले सके;
उसे जीवन दिया गया कि वह उन सब चीज़ों का आनन्द ले सके।
उसे उसमें से जो मांगा था वह कुछ भी नहीं, पर वह सब था जिसकी उसने आशा की थी।
उसकी प्रार्थना का उत्तर मिल गया था। वह सबसे धन्य है।

तीसरा, केवल परमेश्वर ही जानता है कि अन्त में हमारे लिए सबसे बढ़िया क्या है इसलिए हमें सब मामलों को उसके हाथ में दे देना आवश्यक है। हमें यीशु की तरह प्रार्थना करने की आवश्यकता है, ''... मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो'' (लूका 22:42ख)।

सारांश

हमें मांगना और मांगते रहना आवश्यक है। हमें ढूंढ़ना और ढूंढ़ते रहना आवश्यक है। हमें खटखटाना और खटखटाते रहना आवश्यक है। क्या हमें ऐसा इसलिए करना आवश्यक है क्योंकि परमेश्वर उस कंजूस की तरह है जिससे अच्छी चीज़ें पाने के लिए हमें उसके पीछे पीछे घूमना आवश्यक है? नहीं, जब हम पूरे वचन को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि यीशु यह बता रहा था कि हमें प्रार्थना में बने रहना चाहिए, क्योंकि हमें यकीन है कि परमेश्वर दयालू और कृपालू है। यदि हम मांगते रहें, ढूंढ़ते रहें, खटखटाते रहें, तो हमें *मिलेगा,* हम पाएंगे और हमारे लिए खोला *जाएगा*।

क्या इसका अर्थ यह है कि हम कुछ भी और कैसा भी मांगे परमेश्वर हमारी मांग के अनुसार वैसे ही दे देगा और जब हमने मांगा हो तब भी दे देगा? नहीं, परमेश्वर कृपालू दादा नहीं है जो हमारी हर इच्छा को पूरा कर दे। वह हमें केवल वही देता है जो हमारे लिए अच्छा है। न

ही परमेश्वर कंजूस जोकर है जो अपने बच्चों से चालाकियां करता या उन्हें तरसाता है। आप परमेश्वर पर *भरोसा* कर सकते हैं। आप अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए उस पर भरोसा कर सकते हैं। आप उस पर आपको केवल अच्छी चीज़ें देने के लिए भरोसा कर सकते हैं।

परन्तु इस बात को समझें कि मत्ती 7:7–11 की प्रतिज्ञाएं पिता/सन्तान के सम्बन्ध पर आधारित थे। उन्हें अपनाने के लिए आपको परमेश्वर की सन्तान होना आवश्यक है क्या आप उसकी सन्तान हैं? क्या आप विश्वास और आज्ञापालन के द्वारा उसके पास आए हैं? पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:26, 27)। यदि आप सन्तान हैं तो क्या आप *विश्वासयोग्य* बालक हैं। बहुत पहले परमेश्वर ने अपने अविश्वासी बच्चों से कहा था, ''हे भटकने वाले लड़को, लौट आओ, मैं तुम्हारा भटकना सुधार दूंगा'' (यिर्मयाह 3:22)। यदि आपको परमेश्वर की सन्तान बनने की आवश्यकता है, या यदि आप अविश्वासी बालक हैं जिसे परमेश्वर की ओर लौटने की आवश्यकता है, तो अभी समय है (2 कुरिन्थियों 6:2)।

टिप्पणियां

[1]जॉन. ए. वालेक (http://www.fullbooks.com/The-World-s-Best-Poetry--Volume-108.html. इंटरनेट; 26 जुलाई 2008 को देखा गया)। [2]अल्फर्ड टेनीसन, *मोर्टे डी, आर्थर,* लाइन 247; फ्रैंक एस. मेड, संक. एवं संपा., *दि इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ रिलीजियस क्रोटेशंस* (वेस्टवुड, न्यू जर्सी: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1965), 348 में उद्धृत। [3]अब्राहम लिंकन; फ्रैंक एस. मेड, संक. एवं संपा., *दि इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ रिलीजियस क्रोटेशंस* (वेस्टवुड, न्यू जर्सी: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1965), 342. [4]आपको चाहिए कि दूसरों को साथ लेकर चलना पाठ में मत्ती 7:7–11 पर चर्चा की समीक्षा करें। [5]ई. स्टेनले जोन्स, *दि क्राइस्ट आफ़ द माउंट* (न्यू यॉर्क: एबिंग्डन प्रैस, 1931), 256. [6]मीड, 337. [7]आपको चाहिए कि ''मन के दीन'' होने की आवश्यकता की समीक्षा करें (मत्ती 5:3)। [8]रिचर्ड ग्लोवर; जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ ऑन द सरमन ऑन दि माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इनिलोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1978), 184 में इसका सेंत दिया गया [9]जोन्स, 278. [10]एलेनर एल. डोन, संक., *दि स्पीक्र'स सोर्सबुक* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 193.

[11]अन्य वचनों में भजन संहिता 32:5; इब्रानियों 5:7; याकूब 1:5; 5:14, 15. [12]डी. मार्टिन लायड जोनस, *स्टडीज़ इन दि सरमन ऑन द माउंट,* अंक 2 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलिसम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 195. [13]अलेक मोटयर, *स्टडीज़ इन द एपिस्टल ऑफ़ जेम्स* (लंदन: न्यू मिल्डमे प्रैस, 1968), 88. [14]बिल हेबल्स, *टू बिज़ी नॉट टू प्रे,* संशो. संस्क. (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1998), 88. [15]यह और अगला वाक्य लायर्ड जोन्स 195 से लिया गया था। [16]लूका 11 अध्याय में समानान्तर हवाले में अण्ड बनाम बिच्छु का है (आयत 12)। बड़ा, पीला सा गेंद में लिखता अण्डे जैसा लग सकता है। [17]रोटी पढ़ने पर ब्रेड का बड़ा टूकड़ना सोच लें। जहां में रहता हूं वहां ऐसी रोटी को ''डिनर रोल'' कहेंगे। गोल, भूरा सा पत्थर इस रोटी/रोल जैसा लगेगा। [18]यीशु द्वारा पूछे गए दोनों प्रश्नों में एक नकारात्मक (*मैं*) है जो नकारात्मक उत्तर के लिए कहता है: ''नहीं, पिता ऐसा नहीं करेगा।'' [19]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचूएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 66. एक लेखक ने ''गलील की सर्पमीन जैसी कैट फिस, *क्लेरियास लज़ेरा*'' की बात की (आर. टी. फ्रांस, *दि गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* टिंडेल न्यू टैस्टामेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1985], 144). [20]विलियम बार्कले, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक. 1, संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1975), 275 से लिया गया।

[21]डेविड हिल, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (लंदन: बटलर एंड टेन्नर लिमिटेड, 1978), 149. यीशु ने पूर्ण आनुवंशिक पाप की शिक्षा देने के लिए ''बुराई'' शब्द का इस्तेमाल *नहीं* किया। [22]अगली सूची वारेन डब्ल्यू. रोबर्टसन निकोल, सम्पा., *द सरमन आउटलाइन बाइबल: मैथ्यू 1–21* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1958), 182 में सुझाई गई। [23]स्टॉट, 189. [24]रोमियों 8 के अनुसार कई आत्मिक आशिषें जिनका आनन्द हम प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लेते हैं पवित्र आत्मा से ही जुड़ी हैं। [25]रॉल्फ़ स्वीट, *मोमेंट्स ऑन दि माउंट,* लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1963), 65 में उद्धृत।

''सार्वभौमिक उद्धार''?

मत्ती 7:7–11 में अपने बच्चों के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध की तुलना मानवीय पिता के साथ अपने पुत्र से की गई है। मनुष्यों से परमेश्वर की कोई भी तुलना वचन के विशेष संदेश तक सीमित होनी आवश्यक है। कई लोग मत्ती 7:7–11 में तुलना को इतनी दूर ले जाते हैं कि वे इसका इस्तेमाल सार्वभौमिक उद्धार की शिक्षा के लिए करते हैं। उनका तर्क होता है, ''प्रेमी पिता अपने पुत्र को सदा के लिए दण्ड कभी नहीं देगा। इसलिए परमेश्वर किसी को अनन्त दण्ड में नहीं भेजेगा।'' इस तर्क में कई गलतियां पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए यह पद्यांश केवल उनकी बात कर रहा है जिन्हें परमेश्वर अपनी सन्तान के रूप में पहचानता है, न कि सामान्य मनुष्य जाति के।

परन्तु ऐसे तर्क के साथ मुख्य समस्या यह है कि (जैसा मूसा ने कहा है), ''ईश्वर मनुष्य *नहीं*'' (गिनती 23:19क)। हम यह तर्क नहीं दे सकते कि ''हमने किया है इसलिए परमेश्वर भी करेगा। परमेश्वर ने प्रगट कर दिया है कि अविश्वासी और आज्ञा न मानने वाले लोगों को दण्ड दिया जाएगा'' (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9)। इस सच्चाई को जानने के लिए पहाड़ी उपदेश को छोड़ देना भी आवश्यक नहीं है (देखें मत्ती 7:13, 14, 21–23)। हैल्र्ड पाउलर ने लिखा है, ''क्षमा न हुए पापों के लिए अनन्त दण्ड की अवधारणा, जिसमें वे पाए जाएं, परमेश्वर का विचार है, और इस पर उसके साथ बहस करना मनुष्य की मूर्खता है।''[1]

टिप्पणी

[1]हेरल्ड फाउलर, *मैथ्यू 1,* बाइबल स्टडी टैक्सट बुक सीरीज़ (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1968), 413.